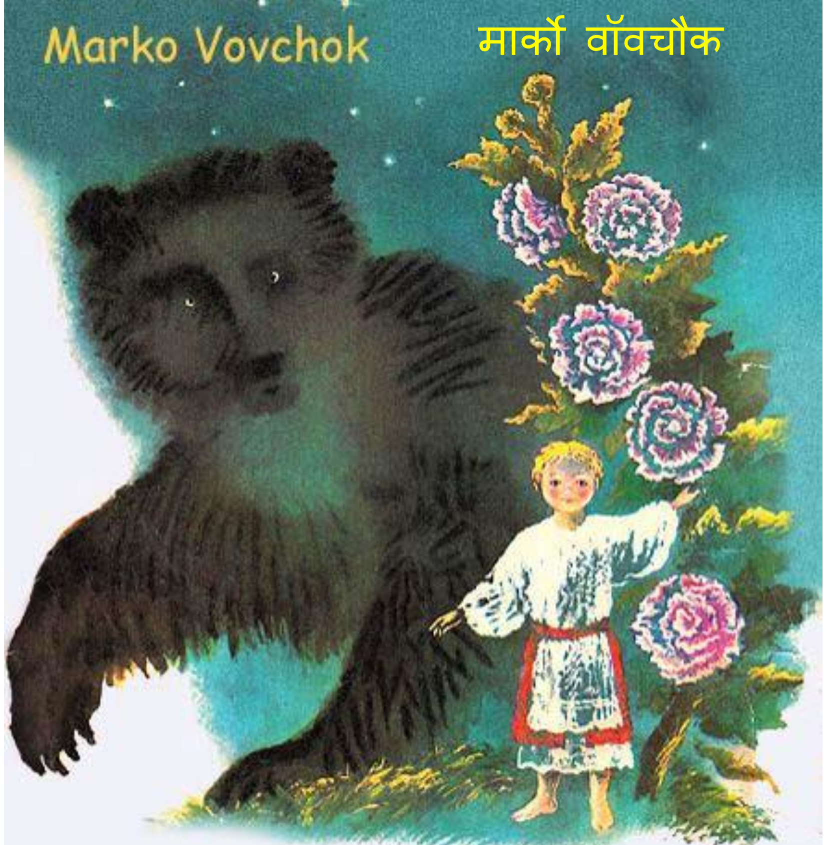


मेलासिया और भालू

चित्र: वी. उल्यानोवा, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

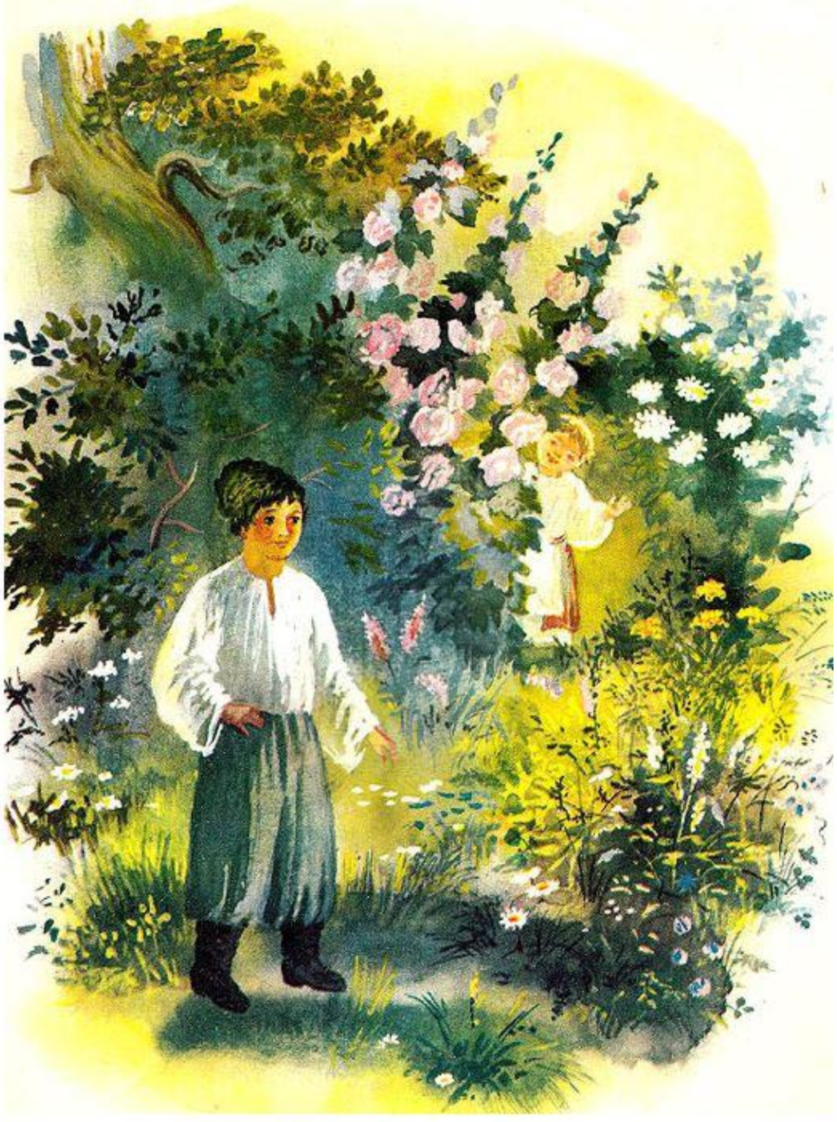


एक घास के मैदान में, एक बगीचे के पास, एक कोसैक का मधुमक्खियों का छत्ता था. क्या यह संभव है कि आप को न पता हो कि मधुमक्खी पालन कैसे होता है? बेशक इस बात की अधिक संभावना है कि आप सभी ने कभी न कभी मधुमक्खियों के शहद का स्वाद ज़रूर चखा होगा...

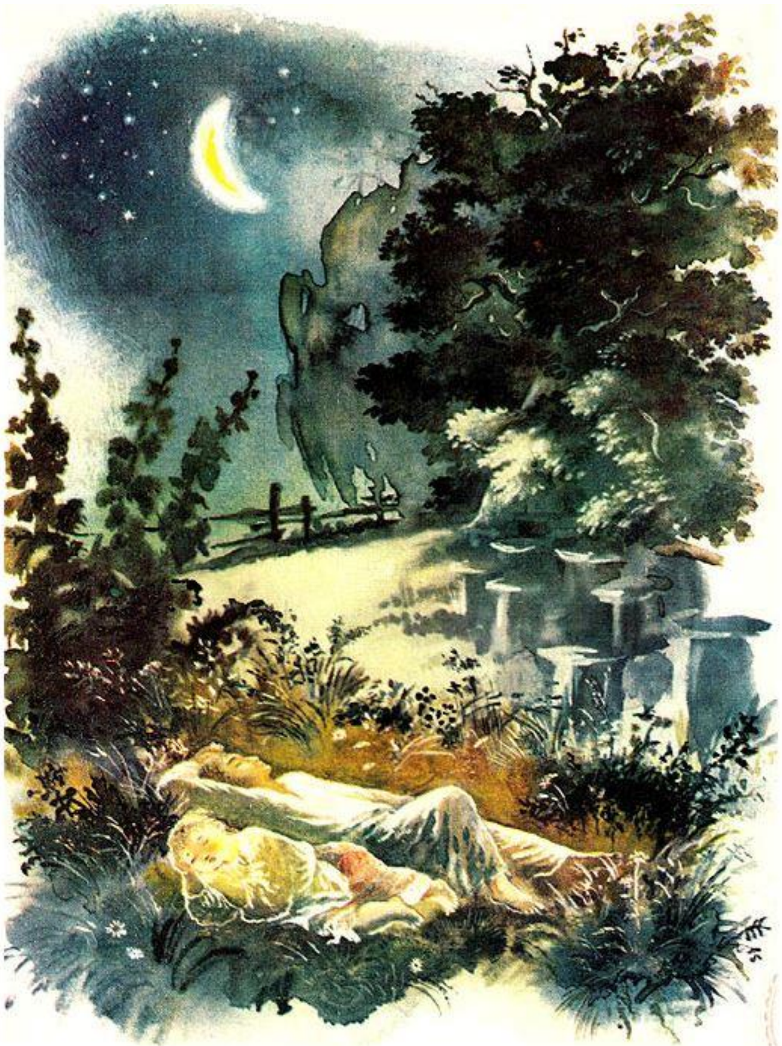
यह विशेष मधुमक्खियों का छत्ता बेलों के जंगल से घिरा हुआ था, और यहाँ, उसके बाड़े के लिए बूढ़े कोसैक ने सात ऊँचे, प्राचीन और गहरी जड़ों वाले बांझ के पेड़ लगाए थे और आठवां, एक चौड़े, पत्तेदार विलो की बाड़ लगाई थी. जो भी विलो को देखता, वह हमेशा यह जानने को इच्छुक होता था कि विलो उन ठोस ओक के पेड़ों के बीच अपने आप कैसे उग आया था...

... वो कितना सुन्दर स्थान था जहाँ मधुमक्खियों के छत्ते लगे थे! ऐसा प्रतीत होता है कि वहां हर किसी को पर्याप्त सांस नहीं मिलती होगी! हवा इतनी हल्की थी - इतनी मुक्त! जिधर भी कोई देखता था, वहां चौड़े खेत थे, यहां-वहां बिखरे हुए विशाल बांझ के पेड़ सूरज के सामने बिखरे हुए तम्बुओं की तरह खड़े थे. एक सड़क गाँव की ओर जाती हुई दिखती थी लेकिन पहाड़ी के ऊपर स्थित गाँव दिखाई नहीं देता था - उगते सूरज की किरणों में जो कुछ भी दिखता था वह जंगल की अंधेरी, भारी रेखाएं थीं.

मिखाइलो के लिए, दादाजी के साथ मधुमक्खियों के छत्तों के बीच गर्मियां बिताना अद्भुत था. और नन्ही मेलासिया, मिखाइलो की बहन, छुटकी, छोटी, गोरे बालों वाली, नंगे पैर, दादाजी के पीछे-पीछे घूमती थी, और शहद के छत्तों के बीच छोटी-छोटी धुनें गुनगुनाते हुए खेलती थी, या घास के मैदान में स्ट्रॉबेरी चुनती हुई घूमती थी... मेलासिया किसी भी अन्य की तुलना में सुबह सबसे पहले बिस्तर से उठती थी और रात में बिस्तर पर सबसे अंत में सोती थी, क्योंकि वो दादाजी के घर के आसपास घूमने में इतनी व्यस्त रहती थी, कि आप उसका कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकते!



अब एक शाम, मिखाइलो, थका हुआ, घास में लेटा हुआ आकाश की ओर देख रहा था. उसने लम्बी बाजू की शर्ट पहनी हुई थी और लाल कढ़ाईदार सैश से बनी बड़ी "शरावरी" पहनी हुई थी. तारे पहले ही निकाल चुके थे और अमावस्या के चाँद की छोटी दरांती बाँझ के पेड़ के ऊपर चमक रही थी मानो उसकी गांठदार शाखाओं में से एक पर लटकी हुई हो. मेलासिया भी थकी हुई थी और अपने भाई के पास थी. वो एक पल के लिए लेटती, फिर बैठती, सपने देखती थी, फिर सवाल पूछती थी कि दादाजी अभी तक घर वापिस क्यों नहीं आए हैं. और कोई आश्चर्य नहीं, समय बीतता गया और दादाजी अभी भी प्रकट नहीं हुए - वो क्षितिज पर दिखाई नहीं दिए.



दादाजी उस शाम गाँव गए थे और किसी कारणवश वो वहीं रुक गए थे. काफ़ी अँधेरा था, सारे तारे निकल चुके थे, चाँद काफ़ी ऊँचा उठ चुका था, मिखाइलो सो गया था, और अभी तक दादाजी नहीं आये थे! कहीं कोई आवाज़ नहीं थी - सब कुछ शांत था! लेकिन अचानक बगीचे की दिशा से एक गहरी गड़गड़ाहट हुई और कोई भारी चीज़ शहद के छत्तों के पास आई. वो चीज़ इतनी विशाल थी - इतनी विशाल थी - कि आप उसे तराज़ू में भी नहीं तौल सकते थे! करीब और करीब - उसने बेल की बाड़ तोड़ डाली और मधुमक्खियों के छत्तों को बिखेर दिया - उन्हें गिरा दिया - उसने फूलों - हॉलीहॉक और गुलाब की झाड़ियों को कुचल दिया, जैसे ही वह गुजरा, वो बड़े बांझ के पेड़ से टकरा गया! क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वो कौन था? एक भयानक झबरा, विशाल भालू जो वहां घूमने आया था!

मेलासिया क्या कर सकती थी? उसकी नींद एक चौंकी हुई चिड़िया की तरह भाग गई, उसके हाथ डर के मारे एक दूसरे से जुड़ गए. वो कितना डरावना और डराने वाला मेहमान था! उसे कोई मदद नहीं मिली! वो अपने प्रिय भाई मिखाइलो को कैसे बचा सकती थी?

मिखाइलो शेड के दरवाजे के पास मीठी नींद में सो रहा था, तभी उसकी नींद को छोटे-छोटे कांपते हाथों ने जगाया, जो किसी बेल की तरह मजबूती से उसके चारों ओर लिपटे हुए थे, जबकि एक छोटी सी आवाज़ फुसफुसाई "मिखाइलो, मेरे भाई, प्यारे भाई!"

"क्यों क्या है?" मिखाइलो ने नींद में, बिना आँखें खोले पूछा.

"कृपया आओ, भाई! कृपया अस्तबल में आओ, क्योंकि मैं वहां अकेली हूँ और बहुत डरी हुई हूँ. आओ भाई, कृपया जल्दी आओ!"

छोटे-छोटे हाथ उसके सोते हुए शरीर को अपनी पूरी ताकत से खींच रहे थे; गरम, डरे हुए आँसू खुलकर गिरे; वफादार और प्यार करने वाला छोटा सा दिल फड़फड़ाने लगा. फिर वो भाई को कुछ कदम खींचकर अस्तबल में ले गई, जहां वह गहरी नींद में बिना सोचे-समझे घास में गिर गया. उसे यह नहीं पता कि कांपते और थके हुए छोटे-छोटे हाथों ने उसे उठाने की कोशिश कैसे की, न ही उसने शांत, कड़वे आँसू महसूस किये.

इस बीच, भालू, घर के मालिक की तरह, बेहतर मधुमक्खी के छत्ते, और सबसे मीठे शहद की तलाश करता रहा, और जैसे ही उसे कुछ मिला, उसने तुरंत अपना बड़ा पंजा उसके मिठास में घुसाया, उसे बाहर निकाला और लालच से उसे चाटने लगा.

"हे प्रिय, हे भगवान! काश मिखाइलो नहीं जगे, वो सोता ही रहे! काश! अगर वह जाग जाता तो क्या होता? वह उसकी बात नहीं सुनता और सीधे बाहर चला जाता भालू की ओर... हे भगवान! फ़िर् भालू उसे तुरंत खा जाता - तुरंत!

"लेकिन क्या वह भालू के लिए काफी होगी? अगर वह काफी होगी तो भालू उसके भाई को नहीं छुएगा... हां, भालू उसे खा ले - तब वह मिखाइलो को नहीं खाएगा!"

छोटे-छोटे हाथ आपस में कसकर चिपक गए, आँसू अधिक तेज़ी से बहने लगे.

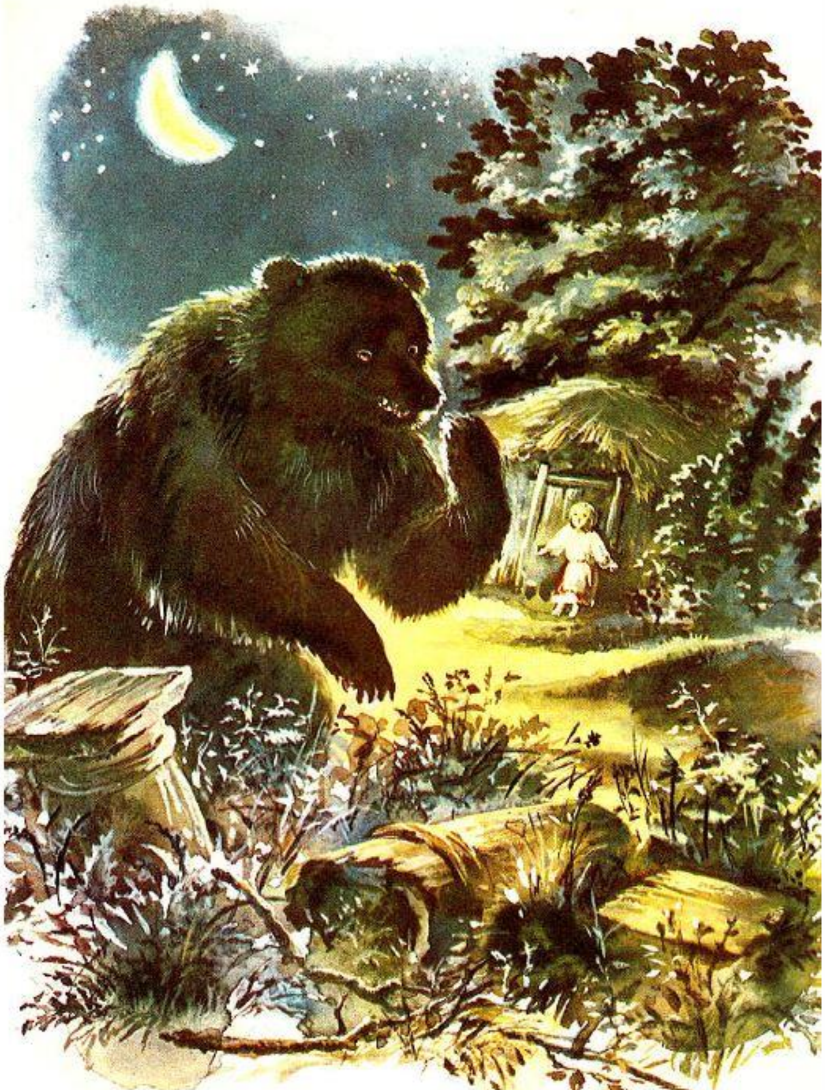
इस बीच भयानक, मीठे दांतों वाला, झबरा विध्वंसक अपना समय शहद को साफ करने में लगा रहा. उसने बीच-बीच में रुककर ऊपर अमावस्या के चाँद की दरांती को देखा मानो अनुमोदन करते हुए कह रहा हो "हाँ, चंद्रमा, तुम मुझे यहाँ बहुत अच्छी तरह से रोशन कर रहे हो." फिर, मानो वो सुन रहा हो, "हाँ, मुझे ऐसा लग रहा है कि एक छोटी लड़की कहीं मेरे पास में रो रही है"...

ओह, यह कितने दुःख की बात थी! ऐसा लगता था कि उसका छोटा सा दिल इतनी देर तक जोर-जोर से धड़कने के बाद टुकड़े-टुकड़े हो गया होगा!

जब भालू गुर्रा रहा था, तो वह उसके दहाड़ने का इंतजार कर थी थी... लेकिन नहीं, वह लापरवाह झबरा प्राणी, जमीन पर लेट गया, और लुढ़ककर घास में लोटने लगा.

छोटे-छोटे हाथ फिर से सोते हुए भाई पर झपटे, और भाई को शेड में खींचकर ले गए, और उसके बाद दरवाज़ा बंद कर दिया.

"क्या हो रहा है? यह क्या है?" कज़ाक लड़का अचानक जाग उठा, शायद वो भी थोड़ा डरा हुआ था. उसने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की. "खोलो! क्या हुआ है?"



"कुछ नहीं भाई, मैं मेलासिया हूँ, मैं!" एक छोटी आवाज ने उत्तर दिया.

"दरवाजा खोलो, मेलासिया!" मिखाइलो फिर चिल्लाया.

"मैं उसे तोड़ना नहीं चाहती हूं!" और उसने दरवाज़े के कब्ज़ों को हिलाया.

"नहीं मिखाइलो!" छोटी लड़की ने उत्तर दिया. "नहीं भाई!" और उसने डरते हुए चारों ओर देखा कि भालू अपने पिछले पैरों पर खड़ा था, सुन रहा था, जैसे कि उसके इंतजार में खड़ा हो, और फिर उसके डर पर हंसते हुए, गुर्राते हुए उसने अपने सफेद दांत दिखाए.

"मुझे बाहर जाने दो, मुझे बाहर जाने दो, मेलासिया!" मिखाइलो चिल्लाया, और उसने ज़ोर से धक्का देकर दरवाज़ा खोल दिया. जैसे ही भालू ने फिर से अपने दाँत दिखाए, मेलासिया दरवाजे के सामने से गेहूँ के एक छोटे से ढेर की तरह गिर गई...

फिर ऐसी चीख-पुकार मची - इतनी ज़ोर से, इतनी चुभने वाली, इतनी गूंजती हुई कि मिखाइलो आश्चर्यचकित होकर पीछे हट गया, और भालू, भयभीत होकर, तेजी से बगीचे की ओर भागा, उसके पैरों के नीचे की ज़मीन हिल रही थी... जब मिखाइलो अंततः होश में आया तो उसने अपनी छोटी बहन को उठाया और पूछा कि यह सब क्या था. वहां देखने या सुनने के लिए कुछ भी नहीं था, हालांकि वे दोनों अपनी सांसें रोककर, एक-दूसरे से लिपटे हुए थे और कठोरता से स्थिर खड़े थे. सब शांत था. चाँद चमक रहा था और तारे टिमटिमाते रहे थे.

"मुझे बताओ, मेलासिया, मुझे शुरू से पूरी कहानी बताओ. क्या हुआ?" मिखाइलो ने पूछा.

"नहीं, नहीं, मैं नहीं बता सकती! मैं अभी भी डरी हुई हूँ!" मेलासिया सिसकते हुए बोली.

"तुम कितनी डरपोक बिल्ली हो, बहन!" मिखाइलो हँसा.



"ओह ओह ओह ओह!" मेलासिया अपने भाई के करीब आई, जैसे उसे कोई खजाना मिल गया हो जिसे उसने बचाया हो.

चाँद वास्तव में ऊँचा था और तारे फीके पड़ गए थे जब उन्होंने दूर से एक टूटी हुई घंटी या संगीत के तार जैसा एक कोसैक गीत सुना, और एक मानव आकृति को आते हुए देखा - वह उनके दादाजी थे. दादाजी उनसे मिलने के लिए आगे बढ़े और हंसते हुए बोले, "अच्छा, तुम अपने बूढ़े दादाजी के बिना अकेला महसूस कर रहे थे, है ना? तुम सो नहीं पा रहे हो, है ना? ठीक है, बच्चों, मैं जल्दी वापिस नहीं आ सका. जल्दी आना संभव ही नहीं था क्योंकि मेरी एक पुराने दोस्त से मुलाकात हुई और फिर हम दोनों बातें करने लगे"...

और बूढ़े ने फिर से एक कोसैक गीत गाना शुरू कर दिया.

जब हम समुद्र पर कोसैक थे.

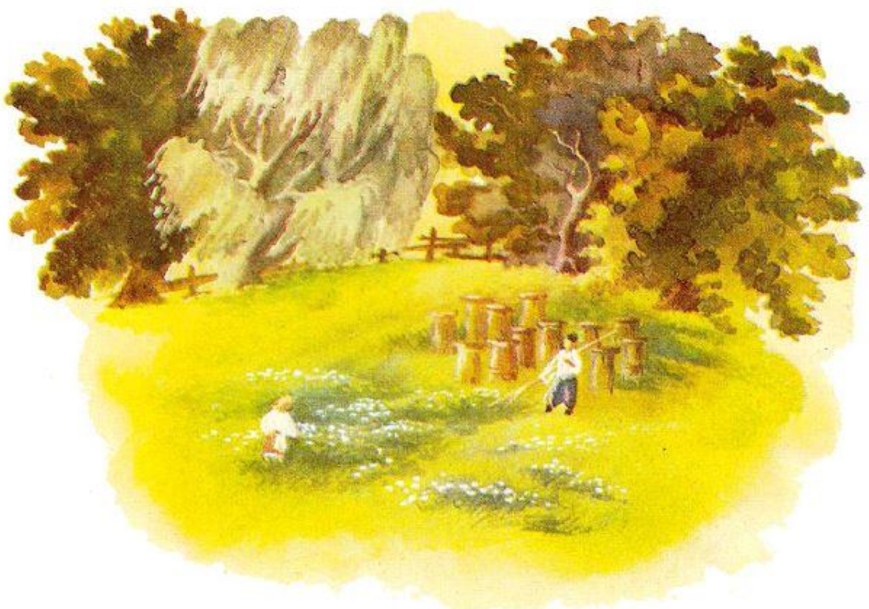
जब हम स्टेपी पर कोसैक थे...

"दादाजी, दादाजी!" मेलासिया ने उन्हें टोका. "यहाँ पर एक भालू आया था!"

"हाँ, दादाजी," मिखाइलो ने कहा, "मेलासिया का कहना है कि मधुमक्खियों के छत्तों में एक भालू था... मैं गहरी नींद में सो रहा था जब मेलासिया ने मुझे खींचकर शेड में धकेल दिया, मेरे लिए दरवाज़ा बंद किया और डराकर मेरी अक्ल खो दी. मैं चिल्लाता रहा, "मुझे बाहर जाने दो!" लेकिन उसने ऐसा नहीं किया. मुझे दरवाज़ा तोड़ना पड़ा. जैसे ही मैं बाहर निकला, उसने इतना शोर मचाया कि मैं शोर के अलावा कुछ भी सुन या देख नहीं सका. जब मुझे होश आया तो वह ज़मीन पर लेटी हुई थी, आसपास कोई नहीं था, मधुमक्खियों के छत्ते उलटे हुए थे, घास रौंदी हुई थी, झाड़ियाँ कुचली हुई थीं... वह कसम खा रही थी कि यहाँ एक भालू आया था."

दादाजी तब तक गुनगुनाते और मुस्कुराते रहे जब तक मिखाइलो ने नहीं कहा कि मधुमक्खियों के छत्ते बर्बाद हो गए थे और झाड़ियाँ कुचली गईं थीं. फिर उन्होंने कहा "हा!" और फिर वो मधुमक्खियों के छत्तों की ओर दौड़े.

"दुष्ट, झबरे, जानवर, तुम अपने जीवन में कभी दूसरा मधुमक्खी का छत्ता कभी नहीं देख सकोगे या शहद का एक और कौर नहीं खा सकोगे!" बूढ़े कज़ाक को गुस्सा आ गया, छत्तों को उठाकर दाहिनी ओर ऊपर रख दिया. "तुमने कितनी बर्बादी की है, और देखो तुमने कितना नुकसान किया है!" मिखाइलो ने अपने दादा की मदद करते हुए सलाह दी कि अगर भालू दोबारा आए तो उनके पास एक अच्छी बंदूक होनी चाहिए, और अपनी कल्पना में उसने खुद को बहुत खुशी के साथ भयानक जानवर पर निशाना साधते हुए देखा. नन्ही मेलासिया उन दोनों के पीछे-पीछे चलती रही और दसवीं बार बताती रही कि वो सब कैसे हुआ था और भालू कैसे रौंदकर पलट गया था, कैसे वह घास में लोट रहा था और वो अपने दांत पीसने लगा था, कैसे उसने शहद चाटा था और वह कैसे आया था करीब... और करीब... और करीब... उसकी आंखें ऊपर के सितारों से भी ज्यादा तेज़ चमक रही थीं, जो आने वाली सुबह के साथ धुंधली होने लगी थीं - और निश्चित रूप से उगते सूरज के साथ क्षितिज चमक रहा था.



"ठीक है, मेलासिया? तुम मेरे दिल के बेहद करीब हो!" फिर दादाजी ने उसे अपनी बाहों में खींचते हुए और उसके थके हुए छोटे चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा. "तुम एक असली कोसैक हो! कल्पना करो, इतनी छोटी सी लड़की में अपने भाई को भालू के दांतों से बचाने का साहस है! क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है, कि इतनी कमजोर छोटी लड़की एक भयानक भालू को डरा सकी और भगा सकी? "

खैर, मेलासिया ने नहीं सोचा था कि यह इतना अद्भुत था, क्योंकि आख़िरकार वह अपने भाई से बहुत प्यार करती थी - फिर वह उसे बचाने की कोशिश क्यों नहीं करती? पर फिर भी, मेलासिया को शायद यह महसूस ज़रूर हुआ कि यह एक सुखद आश्चर्य था, क्योंकि जब भी किसी ने बाद में उसका उल्लेख किया, तो वह शरमा गई और, शायद, उसने थोड़ी डींग भी मारीं ...

"मेलासिया, छोटी बहन, तुम्हारी रक्षा करने की मेरी बारी कब आएगी?" मिखाईलो ने उत्सुकता से इधर-उधर किसी भयावह या कठिन चीज़ की तलाश करते हुए पूछा, ताकि वह भी अपना साहस दिखा सके. "मैं तुम्हें खतरे से कब बचा सकूंगा?"

और मिखाइलो उस समय का सपना देखते हुए बिस्तर पर लेट गया, जब, शायद भालू फिर से दिखाई दे.

वह रात में जागता था, ध्यान से सुनता था, उस बंदूक को देखता था जो उसने खुद खरीदी थी - लेकिन दुर्भाग्य से, भालू फिर कभी नहीं आया.

और यहीं पर मेरी कहानी समाप्त होती है - बाद में क्या हुआ, मैं नहीं जानता और मैं बिना जाने आपको और अधिक बता भी नहीं सकता. इसलिए मुझे आशा है कि जब मैं आपसे विदा लूं और आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करूं तो आप मुझे माफ कर दें!